[ISSN : 2348-2605]

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

www.gejournal.net

E-mail: hindires@gmail.com

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान
शोध पत्रिका
(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

मध्यप्रदेष की राष्ट्रीय चेतना में पं. माखनलाल चतुर्वेदी का योगदान : एक अध्ययन

Dr. Pooja Rani

MA (Hindi), B.Ed. & Net Qualified, Ph.d. (Hindi) Nissing, Distt. Karnal (Haryana), India-132001

----------x.....

पं.माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म सन् 4 अप्रैल 1989 में मध्यप्रदेष में होषंगाबाद जिले के बाबई नामक स्थान में हुआ। इनके पिता का नाम पं. नंदलाल चतुर्वेदी और माता का नाम सुंदर बाई था। मिडिल पास करने के उपरांत उन्होंने 1903 में नार्मल परीक्षा पास की और फिर सन् 1904 में खंडवा मिडिल स्कूल में अध्यापक नियुक्त हो गए। अपने जीवन में इन्होंनें तीन पत्रिकाओं प्रभा, प्रताप और कर्मवीर का संपादन किया। 'कर्मवीर' का प्रकाषन पहले सन् 1919 में जबलपुर से हुआ। उस समय पं. माधवराव सप्रे उसके संचालक थे। सप्रेजी की मृत्यु के उपरांत सन् 1925 में पत्रकारिता का संपूर्ण कार्यभार चतुर्वेदी जी पर आ गया। इन्हीं साप्ताहिक पत्रिकाओं के माध्यम से इनका पत्रकार रूपी व्यक्तित्व प्रस्फुटित, पल्लवित और प्रतिफलित हुआ। जिसने उनके एक कवि, संपादक और राष्टक्कसेवी रूप को प्रतिष्ठित किया। पं. माखनलाल जी महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, माधवराव सप्रे, गणेष षंकर विद्यार्थी से प्रभावित होकर कांतिकारी दल में सम्मिलित हुए। स्वाधीनता संग्राम के दौरान उन्हें 1921, 1923 और 1930 में तीन बार जेल यात्रा हुई। इन्होंने बहुत सी कविताएं कारावास में लिखीं। एक भारतीय आत्मा, इनका दूसरा नाम है, जिसे इन्होंनें अपनी राष्ट्रीय रचनाओं द्वारा सार्थक करके दिखा दिया है। पं. माखनलाल चतुर्वेदी की गणना श्रेष्टतम वक्ताओं में होती थी, हिम–किरीटिनी पर इन्हें देव–पुरस्कार मिला है। सागर वि.वि. ने आनरेरी डॉक्टरेट प्रदान किया। राष्टक्कीय सरकार ने उन्हें सन् 1963 में पद्म भूषण से सम्मानित किया। 16 जून 1965 में पं. द्वारका प्रसाद मिश्र मुख्यमंत्री म.प्र. ने इन्हें 7500 रू. एवं प्रषस्ति पत्र से सम्मानित किया। पं. माखनलाल चतुर्वेदी में राष्ट्रीयता, देषप्रेम की भावना अत्यंत गहरी थी, यही कारण है कि वे विदेषी सत्ता के क्रोध के षिकार हुए और जेल में कष्टमय जीवन व्यतीत किया। 'कैदी और कोकिला' इनकी अत्यंत मार्मिक कविता है, जिसमें विदेषी आकांताओं से दुःखी कैदी की व्यथा दृष्टिगत है, जो अंततः भविष्य में स्वतंत्र भारत के साथ नवीन आषाओं को लेकर चित्रित होती है। फिर भी करूणा गाहक बंदी सोते हैं। स्वप्नों में स्मृतियों की ष्वासें ढोते हैं। पं. माखनलाल चतुर्वेदी की राष्ट्रीय कवितायें एक भिन्न ही प्रकार की प्रगतिषील तत्वों से ओतप्रोत है।

प्रथम वर्ष से ही प्रभा को अच्छे लेखकों का सहयोग मिलने लगा, पर उसका अधिकांष लेखन–श्रम माखन लाल जी ने ही किया। यों समुचे वर्ष किसी भी लेख के साथ उनका नाम कहीं नहीं है। वह तो 'श्री गोपाल'

भारत–सन्तान, कुछ नहीं, भारतीय, सुधार प्रिय, पषुपति, एक विद्यार्थी, एक निर्धन विद्यार्थी, एक भारतीय प्रज्ञा, एक नवयुवक, तरूण भारत, एक प्रान्तीय प्राणी, श्री षंकर और एक भारतीय आत्मा, जैसे चित्र–विचित्र नामों से ही लेख लिखता रहा। इन नामों से लिखने की विवषता भी थी। पुलिस का हाल मध्यप्रदेष के लोगों पर कम नहीं था सरकार ने पत्र निकातन की सरल सुविधाएं अवष्य दे रखी थी, पर लेखक स्वतन्त्र चेता लेखक बनने की सुविधाओं पर उसका षिकंजा कस रखा था। यद्यपि यह साहित्यिक मासिक पत्र था, लेकिन पुलिस इन्पेक्टर रतनलाल जैसे लोगों से बराबर ही सावधान रहने की जरूरत थी। क्रान्तिवादिता में यह सिद्धान्त पहले से धर्म बना ही लिया गया था कि यष प्राप्ति से सर्वदा दूर रहना और प्रषंसा से बचाकर अपने को रखना। यह एक असह्या स्थिति थी कुल मिलाकर। लेकिन वीहड़ वन को ऊपजाऊ बनाने का दुस्साहस ऐसी ही असह्या स्थिति में से जन्म लेता है।

माखन लाल चतुर्वेदीः व्यक्ति और काव्य 113, 114 कवि ने अनेक स्थानों पर 'राष्ट्र' की परिभाषा और उसके स्वरूप का भी विवेचन किया है। उनके भारत राष्ट्र का कल्पना चित्र यह है– 'हिमालय से लगाकर समुद्र पर्यंत जो भू–भाग है उसमें राष्ट्र मानता हूँ। राष्ट्रीयता को माखन लाल जी समय का उपज मानते हैं। उनके विचार से चूंकि राजनीतिज्ञों के हाथों देष सुरक्षित नहीं रह सकता, अतः उसे महज राजनीतिज्ञों के हाथों छोड़ना ठीक नहीं है। राष्ट्रीयता क्या है? इस पर वे कहते हैं कि किसी राष्ट्र के झंडे और विधान से बढ़कर उसके पास और क्या होता है जिस पर गर्व किया जा सके? और इस गर्व की निरंतर सुरक्षा की भावना से बढ़कर और क्या हो सकता है जिसे हम राष्ट्रीयता कहें। वे नैतिकता को राष्ट्र की रीढ़ की हड्डी मानते हैं और राष्ट्र निर्माण के लिए वे ईमान और आदर्षों का बल, अभिमान करने योग्य वस्तुओं की उपस्थिति और बलिदान का निष्चय अनिवार्य समझते हैं। राष्ट्र के लिए बलिदान होना राष्ट्रीयता का मूल तत्व है 'मातृभूमि तब गर्वीली होती है जब हम उसकी सेवा के लिए अपना सिर उतार कर दे सकें।'

राष्ट्रीय कविता के बारे में वे अपने विचार रखते हुए कहते हैं 'मेरे विचार से राष्ट्रीय कविता वही नहीं है, जिसमें खून या फांसी आदि ही लिखे गये हो, अपितु वह भी है, जो राष्ट्रों की ऊँचाई में सम्मानपूर्वक जी सकें। उनके मतानुसार, वे समस्त रचनाएँ जो राष्ट्र का मस्तक ऊँचा उठाने वाली और जिनमें माधुर्य के साथ ही एकता की महत्वकांक्षा वर्तमान है, राष्ट्रीय कही जा सकती है।

माखन लाल की राष्ट्रीयता एक षब्द में 'बलिदानवादी राष्ट्रीयता' है। बलिदान उसकी मूल प्रेरणा है, उसका मूल स्त्रोत है। बलिदान और समपर्ण कवि के राष्ट्रीय काव्य के मूल स्वर है। उन्होंनें स्थान–स्थान पर बलिदान की महत्ता का संकेत किया है। उनके अनुसार 'राष्ट्र तो एक बाग है'। उसकी सीमा रक्षा के लिए सिर सौंपकर बलिदान दिया करते हैं, जिससे संसार में वह भूखण्ड राष्ट्र कहलाने योग्य होता है। आगे चलकर वे कहते हैं कि 'वह मातृभूमि तब गर्वीली होती है जब हम उसकी सेवा के लिए अपना सिर लगा सकें।' कवि की यह भावना निम्न पंक्ति से मुखरित हुई–

'सिर चढ़े या सिर उतारे षत्रु का सिरखेत बोकरा' एक स्थान पर लेखक से वह कहता है कि 'पीढ़ी को तुम मधुर गान दो, तो प्राणों की उठान भी दो, सपने फूले तो बलि के पुष्प भी फूलें.....। कवि की इसी भावना को, उनकी राष्ट्रीय भावना की प्रतिमूर्ति कलिका इन षब्दों में प्रकट करती है। मैं बलि का गान सुनाती हूँ प्रभु के पथ की बनकर फकीर मां पर हंस–हंस बलि होने में खिंच हरी रहे मेरी लकीर।

मातृभूमि पर बलिदान होने के लिए कितनी उमंग है कवि की आत्मा में यहां दिखाई पड़ता है। कवि की बलिदानवादी राष्ट्रीयता पर पिछले अध्यायों में बहुत कुछ कहा जा चुका है। यहां हम संक्षेप में ही उसकी चर्चा करेंगें।

कवि ने आज के साहित्यिक चिन्तक का उत्तरदायित्त्व बतलाया है कि वह पुरूषार्थ को दोनों हाथों में लेकर जीने का खतरा और मरने का स्वाद अपनी पीढ़ी में बोयें। 'मुंडमाला दो इन्हें कवि वेदवाणी से संजोकर, यह पंक्ति कवि के इसी कथन की तो पुष्टि करती है। पराधीन देष की प्रत्येक समस्या का हल, कवि के विचार से बलिदान में है। जो मातृभूमि को स्वतंत्र देखना चाहता हो, वह देष के लिए प्राणेत्सर्ग करें:–

'बोल–बोल मेरे युग–पंथी बुला रही तर्पण की बेला, वह–वह खेल इस आंगन में, जो अपने प्राणों से खेला।'

डॉ0 नगेन्द्र ने ठीक ही कहा है कि माखनलाल जी के वीर गीतों में 'विजय का उत्साह नहीं बलिदान का उत्साह है। और यह गांधी जी की देन है– नीचे लिखी पक्तियों में ध्वनित होता है कि कवि अपने सेनापति 'गांधी जी के आदेष पर आत्म बलिदान करने के लिए प्रस्तुत है। यहाँ वीरोचित कर्म के रूप में सैनिक अनुषासन का समर्थन किया गया है, साथ ही देष की रक्षा के लिए बलिदान की आवष्यकता बताई गई है।

माखनलाल जी की कविता में आत्मोत्सर्ग का अपरिमेय बल कूट–कूट कर भरा है। देखिये उनका 'सिपाही' क्या कहता है– मैं हूँ एक सिपाही बलि है मेरा अन्तिम साध्य। कवि की समस्त अनुभूतियां कल्पनायें एवं अभिव्यंजनायें इसी प्रधान भावना से उद्धेलित प्रतीत होती है। हिमालय की पुकार पर अपना सिर चढ़ा देने का उत्साह देखिए:–

'हिमालय जब पुकारे षीष बो दे, सहस्त्रों में हमारा सिर पिरो दें।'

जब नेताओं के हृदयों में जलने वाला देष के प्रति प्राणोत्सर्ग का उत्साह समाप्त होने लगता है, तब कोई पीढ़ी अपने हृदय में प्राणों की चिनगारियां जगाये आगे आती है, जिनसे आत्मबलि की क्यारियाँ षोभा पाती है।

राष्ट्र की पवित्र धरती पर यदि कोई वार करे, यदि उसकी ओर आंख उठा कर देंखें, उसी दिन बलिदान का त्यौहार मनाया जाएगा। हथेलियां कोटि–कोटि सिरों को लेकर गेंद की तरह क्रीड़ा करेगी।

'किन्तु प्रण की प्राण की बाजी जगे उस दिन

होकि इस भू–भाग पर ही जिस किसी का वार।'

यह बात नहीं है कि बलिदान का महत्व स्वतंत्रता के पहले था और अब नहीं रह गया है। सच बात तो यह है कि उसके अभाव में कोई भी राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता को सुरक्षित नहीं रख सकता। चतुर्वेदी जी अपनी रचनाओं में निरन्तर बलिदान का प्रखर स्वर मुखरित करते हैं। आज भी विषेषकर जबकि हमारे देष पर विदेषी आक्रमण की निरन्तर आषंका बनी हुई है इस प्राणोत्सर्ग की भावना का वही महत्व है जो स्वतंत्रता की प्राप्ति के पूर्व था। लक्ष्मीनारोयणं दूबे ने कहा है – 'माखनलाल जी का समस्त काव्य राष्ट्रीय भावना की धुरी पर घूम रहा है। उनके साहित्य का सार है– बलिदान की पुनीतभावना, जिसका उनके समूचे जीवन पर भी गहन प्रभाव दिख पड़ता है और सच तो यह है कि कवि इस क्षेत्र में अपना कोई प्रतिद्वन्द्वी नहीं देखता। किसी भी अन्य राष्ट्रीय कवि की रचना में बलिदान भावना का इतना मर्म–स्पर्षी और व्यापक रूप देखने में नहीं आता।

इनमें एक ओर आग है, तो दूसरी ओर ताप। कुल मिलाकर इनके व्यक्तित्व में देष के प्रति असीम अनुराग ही राष्ट्रीय भावना का विकास करती हैं, जो कि 'घर मेरा है', 'दुर्गम पथ' और 'विद्रोही' आदि रचनाओं में देखा जा सकता हैं। इनके जीवन का आदर्ष निम्न कविता में अत्यंत स्वच्छ रूप में बिंबित हुआ है– चाह नही मैं सुरबाला के गहनों में गूथा जाऊँ। मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तु फेंक, मातृभूमि पर षीष चढ़ाने, जिस पथ जावे वीर अनेक। पं. माखन लाल चतुर्वेदी केवल देष प्रेम की भावना से ओप–प्रोत ही नहीं अपितु देष गौरव, देषाभिमान की प्रवत्ति भी उनमें दृष्टिगत होती है। इस प्रेम और गर्व की अनुभूति के कारण ही उनके मन में अत्याचार वाले विदेषी ताकतों के प्रति आक्रोष दिखाई पड़ता है और उन्हें खुलकर चुनौती देने का साहस भी है। यह निर्भीकता क्रूरता का पर्याय नहीं है। इस विद्रोह में आत्मदान की भावना हैं। कवि बीज के समान स्वयं मिटकर वृक्ष की हरी–भरी षाखाओं के समान जग में संतप्त प्राणियों को सुख देना चाहता हैं। इस विनाष में चिरंतन विकास के सूत्र हें। इस प्रकार देषप्रेम उसे वीर भाव की ओर ले जाता है और दीप की तरह स्वयं जलकर देष में क्रान्ति का प्रकाष फैलाना चाहता है।

भूमि सा तू पहन बाना आज धानी,

प्राण तेरे साथ है, उठ री जवानी,

पं. चतुर्वेदी की प्रारंभिक रचनाएं प्रभा में प्रकाषित हुई। इनका लेखन कार्य तो द्विवेदी युग से चला आ रहा था, पर प्रकाषन की ओर से उदासीन रहे। यही कारण है कि इनका प्रथम कविता संग्रह 'हिम किरीटिनी' सन् 1943 में उस समय प्रकाषित हुआ, जब द्विवेदी युग छायावाद और प्रगतिवाद तीनों समाप्त हो चुके थे।

पं. चतुर्वेदी त्याग, की मूर्ति थे तथा स्वभाव से स्पष्टवादी और स्वाभिमानी। क्रान्ति की भावना उनकी रचनाओं में स्वतः दिखाई देती है।

तुम न खेलो ग्राम सिहों में भवानी।

विष्व की अभिमान मस्तानी जवानी।

देष के लिए हंसते–हंसते न्यौछावर हो जाना। स्वयं को राष्ट्र निर्माता के लिए समर्पित कर देना उनके आंतरिक षौर्य और पराक्रम को दिग्दर्षित करता है।

ये न मग हैं तब चरण की रेखियाँ हैं।

बलि–दिषा की अमर देखा देखियाँ हैं।

इसी प्रकार राष्ट्र, देषभक्ति की भावना, राष्ट्रीय चेतना और क्रान्ति के रूप में दिखाई देती हैं।

लाल चेहरा है नहीं, फिर लाल किसके।

लाल खून नही ! अरे कंकाल किसके।।

पं. चतुर्वेदी जी की 'गंगा की विदा' इनकी लम्बी और विषिष्ट रचना है, जिसमें गंगा को इन्होंने भारती की भौगोलिक, आर्थिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टियों से देखा है :

षिखर–षिखर पर हिम अश्रु गल रहे,

लहर–लहर पर निर्झर नदियां उसके बल बेहाल चलीं

इसी प्रकार भारत के नदी पहाड़ों में विंध्याचल, बेतवा, नर्मदा का सुंदरतम स्वरूप चेतन और भावमयी चित्रण मिलता है। भारत कृषि भूमि का आकाष, पर्वत, नदी, झरना, फूल, पवन पत्ती सभी इनके लिए अत्यंत आत्मीय हैं।

कुसुम हैं ये, या कि ऋतुओं के चरण रूप हैं

समय श्रम खिल रही लुनाइया ये।

पं. माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के कारण और अपनी रचनाओं द्वारा उसका प्रसार करने तथा बल प्रदान करने के कारण उनका अपना एक व्यक्तित्व है और उसी रूप में महत्व भी। राष्ट्रीय जीवन के विविध सांस्कृतिक मूल्यों का आह्वान उनकी रचनाओं में स्वतः प्रस्फुटित हुआ है। उनकी

रचनाओं में स्वतंत्रता संघर्ष और सांस्कृतिक चिंता का स्वर प्रमुख रहा है। 'निषस्त्र सेनानी' कविता का उद्धृत अंष देखें :

''क्रान्तिकर होगें इनके भाव ? विष्व में इसे जानता कौन ?

कौन से कठिनाई हैं ? यही, बोलते हैं ये भाषा कौन।''

माखन चतुर्वेदी राष्ट्रीय चेतना के कवि हैं। कवि से पूर्व वे एक पत्रकार हैं, अतएव उनकी रचनाओं में कवि की कल्पना समाज और देष की तत्कालीन सच्चाईयों को उजागर करने में अधिक सषक्त और समर्थ दिखाई देती हैं। उनकी रचनाओं में ज्वालामुखी की तरह अंतर्मन धधकता है और विषमता और करूणा का समन्वय भी दिखाई देता है। विराट पौरूष की हुंकार और प्रलयंकर रूप के भी दर्षन होते हैं।

पं. चतुर्वेदी जी ने 1913 में 'प्रभा' पत्रिका का सम्पादन किया। इस समय उनका परिचय गणेष षंकर विद्यार्थी से हुआ। जिनके देषप्रेम और सेवाव्रत का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। सन् 1918 में 'कृष्णार्जुन युद्ध' नाटक की रचना की, 1919 में जबलपुर में कर्मवीर का प्रकाषन किया। 12 जनवरी 1921 को राजद्रोह में गिरफ्तारी के बाद 'प्रताप' का संपादकीय कार्य संभाला। 1927 में भरतपुर में संपादक सम्मेलन के अध्यक्ष और 1943 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन में अध्यक्ष हुए। चतुर्वेदीजी का व्यक्तित्व कवि से अधिक एक सजग, संवेदनषील, जागरूक पत्रकार के रूप में अधिक मुखरित हुआ है। कारण भी यही है कि उनके प्रेरणा स्त्रोत स्वतंत्रता संग्राम सेनानी महात्मा गांधी, माधवराव सप्रे, गणेषषंकर विद्यार्थी इत्यादि महान वीर पुरूष रहे। जिनके मार्गदर्षन में उनका व्यक्तित्व में स्पष्ट निर्मित हुआ। अतएव उनकी छाया चतुर्वेदीजी की रचनाओं में और व्यक्तित्व में स्पष्ट परिलक्षित हुई है। वे ऐसे अनेक पत्रकारों के प्रेरणास्त्रोत के रूप में सदैव स्मरणीय होंगे, जिन्होंने देष की ज्वलंत समस्याओं को पूरी सच्चाई से जनता के समक्ष रखा ही नहीं, अपितू जनचेतना, जनआंदोलन, जनजागृति का माध्यम पत्र–पत्रिकाओं को बनाया। देष की दयनीय अवस्था को दूर कर, अंग्रेज प्रषासन की जड़े कमजोर करने का संकल्प लिया। उनकी प्रमुख रचनायें हिम किरीटनी (1942), साहित्य देवता (1942), हिमतरंगिनी (1949), युग चरण 'समर्पण' वेणु लो गूंजे धरा' और 'माता' (1952) है। 'हिमरंगिनी' को साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला।

इनकी कविताओं ने आजादी के आन्दोलन के दौरान हजारों–लाखों युवाओं में विदेषी राषन के जुए को उखाड़ फेंकने के लिए ऐसा असाधारण जोष भरा कि वे आन्दोलन के महानायक महात्मा गाँधी के नेतृत्व में अपना सर्वस्व रूप से तैयार हो गए। आजीवन देष सेवा के लिए अनन्य रूप से समर्पित माखन लाल चतुर्वेदी लोकमान्य तिलक के संकल्प 'आजादी हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' से अभिभूत हो सच्चे मन से देष के प्रति आजीवन समर्पित रहे।

वे सरस्वती के ऐसे अथक साधक रहे जिनकी रचनाएं भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रगौरव से पूरी तरह अनुप्राणित रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उन्होंने कई महत्वपूर्ण सरकारी पद अस्वीकार कर दिए। इनके लिए किसी भी पद लालसा से ज्यादा राष्ट्र भक्ति प्रिय थी। इनका सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र हित के लिए समर्पित था इसीलिए इन्हें ''एक भारतीय आत्मा'' कहा जाता था।

मध्यप्रदेष की राष्ट्रीय चेतना के प्रतिनिधित्वकर्ता के रूप में पं. माखन लाल चतुर्वेदी सदैव स्मरणीय रहेगें। क्योंकि मध्यप्रदेष की राष्ट्रीय चेतना में इनका स्थान अग्रगणय है।

संदर्भ :

डॉ रामखिलावन तिवारी, माखन लाल चतुर्वेदी : व्यक्ति और काव्य, पृष्ट सं. 54, 55, 73।

वहीं पृ0 113,114, 199, 200, 201, 202।

ऋषि जैमिनी कौषिक 'बरूआ' – माखन लाल चतुर्वेदी : षैषव और कैषोर, पृ0 277, 278

माखन लाल चतुर्वेदी : पुष्प की अभिलाषा